

## What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe.

It propagates the universal doctrines of humanity.

It is neither a religion nor a sect.

# ARYAN VOICE

YEAR 41

07/2019-20

MONTHLY

July 2019

## (Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan)

Festival	Date	Time
A.G.M	Sunday 28th July	11am – 1pm
Independence Day of India	Sunday 18 <sup>th</sup> August	11am – 1pm
Raksha Bandhan	Sunday 18th August	11am – 1pm
Ved Katha (8 days)	Friday 16 <sup>th</sup> August to Friday 23 <sup>rd</sup> August	7pm – 9pm
Shri Krishna Janmasthanmi	Sunday 25 <sup>th</sup> August	11am – 1pm
G.M.Y	Sunday 1 <sup>st</sup> September	11am – 1.30pm

Website - [www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org)

Charity registration number 1156785

facebook <https://www.facebook.com/aryasamajwestmidlands/>

## **CONTENTS**

<b>10 Principles of Arya Samaj</b>	<b>3</b>
<b>Ultimate Refuge of the Universe - By Mr Krishan Chopra</b>	<b>4</b>
<b>वेदों में विज्ञान-२- आचार्य डॉ. उमेश यादव</b>	<b>6</b>
<b>A Brief Introduction of Arya Samaj - Dr. Narendra Kumar</b>	<b>10</b>
<b>Historical Day for Arya Samaj (Vedic Mission)</b>	
<b>West Midlands – Mrs B. B Duggal</b>	<b>16</b>
<b>The Fall and Rise of a Merchant.</b>	<b>19</b>
<b>Matrimonial Service information</b>	<b>22</b>
<b>News (पारिवारिक समाचार)</b>	<b>23</b>
<b>New Building Refurbishment Fund</b>	<b>25</b>
<b>A Tribute to Shri Vishwanath Bhandari –</b>	
<b>Dr. Narendra Kumar</b>	<b>26</b>
<b>Fee for services provided by Arya Samaj West Midlands</b>	<b>28</b>

**For General and Matrimonial Enquiries  
Please Ring  
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)  
Monday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,  
Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.  
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727  
E-mail- enquiries@arya-samaj.org**

## **10 Principles of Arya Samaj**

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

## Ultimate Refuge of the Universe

इयं वेदिः परोऽन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः । अयं सोमो  
वृष्णोऽश्वस्य रेतो वाचः परमं व्योम ॥ यजुर्वेद २३.६२

iyam vedih paro antah prthivyah ayam yajno visvasya  
bhuvanasya nabhih । ayam somo vrsno asvasya reto vacah  
parmam vyoma ॥

Yajur Veda 23.62

### Meaning in Text Order

Iyam = this

Vedih = alter

Parah = farthest

Antah = end

Prthivyah = earth

Ayam = this

Yajna = yajna

Visvasya = whole

Bhuvanasya = universal

Nabhih = naval

Ayam = this

Somah =

Vrsnah =

Asvasya =

Retah =

Brahma = knower of four Vedas

Ayam = this

Vacah = speech

Parmam = supreme

Vyoma = refuge.

## **Meaning**

This altar of yajna is the farthest point of earth. This yajna is the naval point which binds the whole universe appropriately. The rain water is soma which is the lifeline of earth. Brahma (God) is the supreme refuge of knowledge and speech.

## **Contemplation**

This altar of yajna is the farthest point of earth. Every human being, where he is standing is the farthest point of earth. For every human being, his altar of yajna is the farthest point of earth because earth is round. Where we are standing near altar of yajna, this is farthest point of earth. In spiritual form, this earth is altar of yajna. For spiritual purpose, our body is an altar of yajna. To find the farthest point, we don't have to go far away; the altar of yajna is within ourselves. When a human being understands that then he reaches to farthest point of world.

The altar of yajna is the naval, the central point which has bound the universe and all things of universe are connected with it. In the form of yajna the entire universe is connected. Yajna is the naval which is binding together everything in the world otherwise everything will scatter.

It binds everything accordingly. When we perform yajna with soma, (the juice of vegetation) then through Aditya, the world becomes prosperous. It is due to rain (soma juice) that all plants are nourished.

God (Brahma) who has the knowledge of four Vedas, He is the origin of all speeches and immersed in Him. He is the protector of knowledge, scriptures and speeches He is the only and supreme refuge.

**By Mr Krishan Chopra**

## वेदों में विज्ञान-२

आचार्य डॉ. उमेश यादव

### वर्षा का कारण

सामान्यतया यह समझा जाता है कि जल, सूर्य तथा बादल/मेघ का अटुट सम्बन्ध है । अग्निषोमात्मकं जगत्- अग्नि और सोम से जगत् बना है । सूर्य अग्नि का मूल केन्द्र है और समुद्र जल का । पहले हम जल के निर्माण को समझते हैं । अथर्ववेद ३.१३.५ “अग्निषोमौ बिभ्रति--आप इत् ताः” के अनुसार जल में अग्नि (ऑक्सीजन) तथा सोम(हाईड्रोजन) दोनों हैं । वेदों में स्थान-स्थान पर आक्सीजन के लिये अनेक शब्दों का प्रयोग किया गया है । जैसे- अग्नि, मित्र, मातरिश्वा, वैश्वानर (बड़वानल) आदि । इसी तरह सोम, जल, आपः, सलिल, वरुण आदि हाईड्रोजन का प्रतीक है । अर्थात् अग्नि में आक्सीजन अधिक और जल में हाईड्रोजन अधिक उपलब्ध है । अथर्ववेद १०.८.४० अप्सु-आसीन् -“मातरिश्वा प्रविष्टः” और इसी तरह ऋग्वेद में कहा- वैश्वानरो यासु-अग्निः प्रविष्टः-७.४९.४- इनका अर्थ है- जल में मातरिश्वा/वायु (आक्सीजन) और वैश्वानर अग्नि विद्यमान है । इस तरह जल में आक्सीजन भी है और हाईड्रोजन भी है ।

यहाँ ऋग्वेद का एक मंत्र उपस्थित करता हूँ- मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं घृताचीं साधन्ता- इसका अर्थ - मैं (ईश्वर) जल की प्राप्ति हेतु मित्र (आक्सीजन) जो पवित्र ऊर्जा (एनर्जी) को तथा दोषों को नष्ट करने वाले वरुण (हाईड्रोजन) को ग्रहण करता हूँ । इनकी मात्रा का निर्धारण ऋषि/अन्वेशक/ वैज्ञानिक प्रयोग-विधि के आधार पर करते हैं ।

ऋग्वेद-७.३३.१० से १३ तक के मन्त्रों में विस्तार से जल बनाने की विधि बतायी गयी है । मंत्रों के आधार पर ऋषि एक कुम्भ/पुष्कर (परखनली) में मित्र का रेत वीर्य/शक्ति-कण और वरुण का रेत वीर्य/शक्ति कण अलग-अलग मात्रा में एक ही साथ डाला गया और एक प्रयोग में में पाया गया कि दोनों की एक ऐसी उचित मात्रा उपस्थित हुई जिससे अगस्त और वशिष्ठ ऋषि अर्थात् जल की उत्पत्ति हुई । अगस्त व वशिष्ठ दो विद्युत् शक्तियाँ हैं, यही कारण है कि विद्युत् के निर्माण में जल व अग्नि का प्रयोग किया जाता है । मित्र व वरुण के योग में जब विद्युत्-प्रवाह किया जाता है तब इनके अन्दर रासायनिक प्रक्रिया होती है और तब जल बनने लगता है । मंत्र में अगस्त व वशिष्ठ को कुम्भज अर्थात् घड़े से उत्पन्न और ऊर्वशी विद्युत् को कहा गया । ये दोनों शब्द ऊर्वशी/विद्युत् के मानस पुत्र माने गये । पुत्र जन्म का प्रतीक है । विद्युत् जनक और मित्र व वरुण इसकी दो साकारात्मक (+) व नाकारात्मक (-) रेतस शक्तियाँ । इस प्रकार यहाँ आलंकारिक वर्णन भी समझा जा सकता है । मंत्र में उरु अशी शब्दों का प्रयोग हुआ अर्थात् विशाल क्षेत्र में व्याप्त है । यही ऊर्वशी है; विद्युत् है ।

वैज्ञानिक प्रक्रिया में हमें यह समझना होगा कि अगस्त व वशिष्ठ अर्थात् जल विद्युत् के पेट से नहीं अपितु विद्युत् के सम्पर्क से मित्र अर्थात् आक्सीजन और वरुण अर्थात् हाईजन एक उचित मात्रा में मिले तो जल का निर्माण हो गया । जल का सूत्र समझें-  $H_2O$  हाईड्रोजन गैस के २ अणु/ मॉलेक्युल और आक्सीजन के १ अणु/मॉलेक्युल एक पात्र में जब रखा जाता है और उसमें विद्युत् तरंग प्रवाहित किया जाता है तब जल अर्थात्  $H_2O$  बनता है । गणितीय क्रम में मात्रा/पोटेंसी के हिसाब से

हाईड्रोजन की दो मात्रा औरा आक्सीजन की १६ मात्रा बन जाती है । इस १६ मात्रा को आक्सीजन के एक अणु/मौलिक्युल से ही आँका जाता है । प्रमाण के लिये यहाँ उन मंत्रों को भी उद्धृत किया जा रहा है जिनमें जल-निर्माण की विधि का वर्णन है ।

१. विद्युतो ज्योतिः परिसंजिहानं मित्रावरुणा यदपश्यतां त्वा । तत् ते जन्म-उतैकं वशिष्ठ, अगस्त्यो... ॥

२. उतासि मैत्रावरुणो वशिष्ठ, ऊर्वश्यां मनसोऽधि जातः ।

३. अप्सरसः परि जज्ञे वशिष्ठः । द्रप्सं स्कन्नं---पुस्करे त्वाददन्त ।

४. कुम्भे रेतः सिषिचतुः समानम् । ततो जातमाहुर्वशिष्ठम् । ऋग्वेद-

७.३३.१०-१३

मित्र व वरुण ही वर्षा के मूल कारण हैं

प्रमाण-

क- मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् । यजुर्वेद- २.१६, शतपथ ब्राह्मण- १.८.३.१२

ख- मरुतां पृषतीर्गच्छ, वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ,

ततो नो वृष्टिमावह । यजुर्वेद-२.१६

ग- अभ्रं वा अपां भस्म । यजुर्वेद १३.५३, शत. ७.५.२.४८

यहाँ इन मंत्रों में यही बताया कि मित्र/आक्सीजन और वरुण/हाईड्रोजन से जल जो बनता है, वह सूर्य के ताप से वाष्प बनकर समुद्र से आकाश में जाता है और जल का भस्म/ अभ्र बादल रूप बन कर फिर विद्युत् से प्रभावित होकर जल रूप हो पुनः पृथिवी पर वही वरस जाता है जिसे वर्षा



कहते हैं । यह स्पष्ट है कि मित्र व वरुण का विद्युत् से सम्पर्क न हो तो वृष्टि नहीं हो सकती न ही सूर्य के बिना जल का वाष्प ही बन सकता फिर बादल भी नहीं बन सकता । विद्युत् भी एक अग्नि का हिस्सा है जिसका मूल स्रोत सूर्य है । वह कई रूपों में जगत् के सभी अवयवों में विद्यमान होता है । अग्नि जल , वायु, आकाश, पृथिवी आदि सब में व्याप्त है ।

वस्तुतः सूर्य में हिलियम और हाईड्रोजन पर्याप्त मात्रा में है । अपां रसं उद्वयसं सूर्ये सन्तं समाहितं । अपां रसस्य यो रसस्तं गृह्णाम्युत्तमम् ॥ यजु. ९.३ अपां रसः- जो जल का हाईड्रोजन भाग है वह पर्याप्त मात्रा में सूर्य में उपलब्ध है । जल का प्रचुर भाग से जब हिलियम गैस सम्पर्क बनाता है किसी खाश ताप पर तो बादल/मेघ रूप जल पिघलने लगता है और वर्षा की बूंदें वरसने लगती हैं ।

वर्षा के अनुकूल वातावरण बनाने में पृथिवी के अन्य कई तत्त्व वृक्ष-वनस्पति, वायु-प्रवाह, विद्युत् तरंग और अग्निहोत्र आदि सब अत्यन्त कारगर हैं जो वातावरण को केवल शुद्ध ही नहीं करते अपितु समयानुसार वर्षा कराने में भी पूर्ण सहायक हैं । अग्निहोत्र/यज्ञ सर्वाधिक सहयोगी कार्य है जो पर्याप्त वर्षा कराने में उपयोगी है । यही कारण है कि जब तक वैदिक काल में घर-घर सर्वत्र यज्ञ/अग्निहोत्र होते थे प्रातः-सायम् तो अति वर्षा नहीं होती थी, अति सूखा नहीं पड़ता था । सब ऋतुयें संतुलित हुआ करती थीं जो सबके सर्वांगीण विकास के कारण हुआ करता था । इसका वैज्ञानिक विस्तार आने वाले अंकों में अपेक्षित है ।

# **A BRIEF INTRODUCTION OF ARYA SAMAJ**

**By Dr. Narendra Kumar**

In order to re-establish the true teachings of The Vedas and Vedic Culture in India, on the 7th of April 1875, Maharishi Dayanand Saraswati laid down the foundation of Arya Samaj in Bombay City, India. The aim of Arya Samaj is to disseminate the true teachings of The Vedas, allowing human beings all over the world to live in peace within themselves, respect their surrounding environment and followers of other religions. The true teachings of Vedas, as propagated by Maharishi Dayanand Saraswati and followed by Arya Samaj all over the world, will ameliorate the spiritual, physical and social conditions of human beings all over the world.

## **What are the Vedas?**

The very word Veda means knowledge. The Vedas are the fountain head of knowledge.

Hindus believe that at the beginning of creation, nearly two billion years ago, Almighty God gave the knowledge of the four Vedas to four learned Rishis (teachers) named Agni, Vayu, Aditya and Angira. The four Vedas, called Rigved, Yajurved, Saamved and Atharvaved, contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world. Vedas are not only holy books which tell us how to do Sandhya and Havana and worship one Almighty God, but are full of all kinds of true knowledge known to human beings all over the world. The Vedas are for one and all to read: men, women and children. There are 10,552 Mantras in Rigved, 1975 Mantras in Yajurved, 1875 Mantras in Saamved and 5977 Mantras in Atharved. The total number of Mantras in four Vedas are 20,379.

The entire humanity recognises that RigVed is the oldest book in the library of mankind. The Vedas tell about how human beings should live their lives on this earth in total harmony with their environment.

At the time of revelation of The Vedas there were no other religions

in existence in this world. This is why there is no mention of Christianity, Islam, Buddhism and Hinduism etc. in all four Vedas.

Arya Samaj is an expanding movement with a worldwide programme and message.

### **What is Arya Samaj?**

Arya Samaj, founded by Maharishi Dayanand Saraswati, is an institution based on the teachings of The Vedas for the welfare of the universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

### **The 10 principles of Arya Samaj**

Maharishi Dayanand Saraswati believed that humanity, in its desire of living a comfortable physical life, did make big progress in material matters but lost sight of the fundamental Vedic teachings which provide inner peace and contentment (self-satisfaction) and living in harmony with the environment. In order to correct above anomaly he wrote ten principles of Arya Samaj.

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**

5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.
6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.
7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.
8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).
9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.
10. In matters which affect the wellbeing of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.

The above ten principles of Arya Samaj give a clear impression to the reader about its founding principles and guidelines for a follower of Arya Samaj to practice in his/her day to day life.

Every human being is directly connected to our Almighty God and the correct way of achieving spiritual communion with Almighty God is through **STUTI (describing the qualities of God), PRAARTHANA (prayers to God) and UPAASNA (sit closer to God) by reciting mantras from The Vedas.**

As The Vedas speak of God and sacred scriptures, it is clear that Arya Samaj is a spiritual movement. But Arya Samaj is not a religious sect as it does not believe in a human representation of our Almighty God in the form of a prophet, mediator, saviour or Avatar (incarnation). The Vedas are the root of Hinduism as is the case with Arya Samaj movement. **But the big difference between the two is that The Arya Samaj movement follows the true teachings of the four Vedas and believes in one Almighty God with attributes as written in the Second Principle of Arya Samaj and as written and explained by Maharishi Dayanand Saraswati in his various literary works.**

**God is one and one alone.** God may have many names as well as many attributes and we, the users of different languages have a separate word for each separate attribute. The Oneness of God and the plurality of God's names, is the key belief of Arya Samaj followers. According to Maharishi Dayanand Saraswati, as written in his famous book *Satyarth Prakash*, the best name of Almighty God is “OM”.

The membership of Arya Samaj is open to all who believe in the Ten Principles of Arya Samaj without any distinction of sex, class, race, nation or country.

### **Who are Arya?**

Arya Samaj is a society of noble people. The word Arya literally means best, devotee, good moral conduct and dutiful.

Some members of Arya Samaj write title of Arya at the end of their names. But Arya is not a caste.

Contrary to some writings Aryans always lived in Aryavrata as India was known in Vedic period. Aryans are the followers of teachings of Vedas. Naturally Aryavrata was their usual place to live in the world.

### **What are the main aims and objects of Arya Samaj?**

The main aim of Arya Samaj is to make the universe a best place by all means for human beings to live in, Krinvanto Vishwamaryam. Best way to achieve this aim is to propagate the true teachings of Vedas to all mankind. This involves to do all things which are beneficial to human beings, animals and environment as written in Vedas. Four Vedas tell in detail about the way all human beings should live their lives which is in harmony with the surrounding environment they live in. This includes Sixteen Sacraments as written by Maharishi Dayanand Saraswati in his book “Samskar Vidhi”. These Sacraments are performed at various stages in human lives.

Readers who are keen to know about these Sacraments can get in touch with Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands.

## **Activities of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands**

- Congregation (Satsang) every Sunday Sandhya, Havan, sermons at Arya Samaj Bhavan from 11am to 1pm.
- Day Centre at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.
- Yoga Lesson with Dr. Dheeraj Prakash Joshi – Every Thursday 7.15pm – 8.15pm
- Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7am to 8am, first Sunday of the month.
- 8 days of Ved Katha starting on Raksha Bandhan and ending on Krishna Janmashtami in August every year
- Performing marriage, cremation, Mundan, Havan naming, Ved Path and all Sacraments when required and requested by the members of the community at home.
- Monthly bulletin Aryan Voice.
- Library – Vedas, Upanishad, Darshan, Mahabarat, Ramayan and other religious books in Hindi, Sanskrit and English.

## **GAYATRI MANTRA**

Gayatri Mantra is written in three of the four Vedas namely Rigved, Yajurved and Saamved. This is one of the most important Mantra and is recited very commonly by millions of followers of Arya Samaj movement and Hindus all over the world on all religious occasions and daily prayers.

**OM BHOOR BHUVAH SWAH!  
TAT SAVITUR VARENYAM  
BHARGO DEVASYA DHEEMAHI.  
DHIYO YO NAH PRACHODAYAAT.**

## **Meaning in text order**

- **(OM)** IS THE MAIN NAME OF ALMIGHTY GOD WHICH INCLUDES ALL OTHER NAMES OF GOD.
- **(BHUH)** HE IS LIFE OF LIFE.
- **(BHUVAH)** HE IS THE PROTECTOR FROM ALL THE PAINS.
- **(SWAH)** HE IS ALL BLISS AND GIVER OF ALL BLISS TO HIS DEVOTEES
- **(SAVITUH)** HE IS CREATOR OF ALL UNIVERSE, THE ILLUMINATOR OF ALL THE LUMINOUS BODIES LIKE SUN ETC. THE GIVER OF ALL WISDOM AND WEALTH
- **(DEVASYA)** WE ESTABLISH HIM IN OUR HEART AS MOST DESIRABLE AND VICTORIOUS
- **(VARENYAM)** MOST SUPERIOR TO ACCEPT AND MEDITATE.
- **(BHARGAH)** HE BURNS ALL PAINS AND IS HOLY, SACRED AND PURE BY NATURE.
- **(TAT)** TO THAT ALMIGHTY GOD
- **(DHEMAHI)** WE SHOULD ACCEPT AND HOLD.
- **(YAH)** THAT ALMIGHTY GOD
- **(NAH)** OUR
- **(DHIYAH)** MIND IN BEST ATTRIBUTES, DEED AND NATURE (HABBIT & TEMPERAMENT).

**(PRACHODAYAT)** INSPIRE US.

## **Meaning**

**O protector Lord, Life giver, remover of pain and sorrows, Bestower of comforts and happiness, Thou are creator of Universe and worthy of worship. O illuminator of our souls, we meditate thy glory. O gracious Lord lead our intellects to the noble path.**

# **HISTORICAL DAY FOR** **ARYA SAMAJ (VEDIC MISSION)** **WEST MIDLANDS**

Today, 26<sup>th</sup> June, 2019, was a very joyful day at our Arya Samaj.

Two groups of 90 and 80 children, each group accompanied by 5 Teachers, visited our Bhavan and showed interest in our work and activities.

Before Easter Holidays we sent Emails to several Schools in our area as well the Central Academy in Birmingham City Centre asking them to include the name of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands on their list of religious establishments to be visited by their pupils as a part of their Religious Studies Curriculum.

As a result, we were recently contacted by Staff from Great Barr Academy and visits were arranged for today. Great Barr Academy is a co-educational Secondary School on Aldridge Road, Great Barr, Birmingham for pupils aged 11-19 years. It is one of the largest Academies in the whole of UK with approximately 1800 pupils.

The arrangements for the visit were made well in advance and this gave us the opportunity to prepare “A brief introduction to Arya Samaj” including explanations of when and by whom it was set up, meaning of Arya, 10 Principles of Arya Samaj as written by Maharishi Dayanand Saraswati as well as what we believe and how we pray.

The first group arrived in the morning at about 9:30 am and stayed until 10:45am. The second group arrived at 2 pm and stayed until 3pm. Both groups of pupils and teachers were given a tour of the



building including Library before being seated in the main Maharishi Dayanand Saraswati Hall. We also informed them about the activities that take place at Arya Samaj on a regular basis and mentioned the sacraments/sanskaras that are celebrated as well as the Festivals that we celebrate each year.

They were welcomed by Dr. Narendra Kumar, Chairman who then asked Mrs B.B. Duggal to read out the “Brief Introduction to Arya Samaj” The children who were from Year 8 (aged between 12/13) listened with intent and were really well behaved. At the end of each session, some of the pupils and their Teachers asked questions such as: “How the Vedic knowledge was passed down from generation to generation”; “Do you believe in one God?”, “Does God has a shape? “ How we celebrate Diwali? And what are our methods of pray etc. etc... Satisfactory answers were given by Acharya Yadav Ji, Dr. Kumar and Mrs. Duggal.

Both groups applauded loudly at the end of their sessions. Mrs. Duggal thanked them for taking interest in our Arya Samaj and for their visit. Folders with information about Arya Samaj were given to all the teachers so that they could answer any further questions their pupils may raise during lessons.

On the whole the day went smoothly with no disruption to our Day Centre’s activities.

**Written by**

**Mrs. B. B. Duggal**  
**Secretary**  
**ASWM**



## **Children's Corner**

### **Panchatantra Tales**



#### **"The Fall and Rise of a Merchant".**

In the city of vardhaman, there lived a wealthy merchant by the name of Dantila. He was one of the most trusted advisers of the King and was the King's favourite.

Once, he organised a lavish reception for his daughter's wedding ceremony which was attended by the King, the Queen, their Ministers and all the rich and influential people in the city. At this reception also came Gorambha – a lowly sweeper in the royal household. When Dantila saw him seated on a seat meant for noblemen, he became very angry. He ordered Gorambha to be thrown out of the gates.

Humiliated, Gorambha began to plot his revenge on Dantila. Knowing that he could not directly take revenge because he was a poor man, he thought of an idea.

One morning, as he was sweeping near the bed where the King lay half awake, he said: What impudence! Dantila kissed the Queen.

When the King heard this, he jumped up in a hurry, crying “~ come, come! What is it that you were muttering? Has the Queen been kissed by Dantila?”

“O King! I was up all night as I was gambling and I am overtaken by sleep even when I sweep. I do not know what I said”. Replied Gorambha.

The jealous King thought that it was possible that the sweeper had seen Dantila with the Queen, as Gorambha had access to his palace. He also remembered wise men saying that men were likely to speak the truth in their sleep (or when they are drunk) about what they did, saw and desired in the day. Convinced that Dantila had indeed embraced the Queen, the King stripped Dantila of his administrative position, and forbade his entrance in to either the court or the royal household.

The next day, as Dantila was entering at the palace gates, he was stopped by the guards and told to go back. Gorambha, who was passing by, observed this and remarked, “Be careful guards! This fellow’s temper has been spoiled by the King’s favour and he dispenses arrests and releases at will. If you stop him, you will get a cuffing, just like me.”

Dantila understood that Gorambha was responsible in some manner for his banishment. He remembered the wise saying that even a foolish and base servant, if having royal connections, must be kept happy, for he can unduly influence the King. He went home and summoned the servant. When Gorambha arrived, the Merchant gave him a warm welcome and expensive gifts. Then seated him and said, “My good fellow, I did not drive you out by the order of the King. It was because I saw you sitting in a seat meant for noblemen, where you did not belong, in that I humiliated you.”

Now Gorambha was intensely satisfied at receiving the gifts and said “Friend Merchant, I forgive you. You will soon see the reward of the honour you have shown me.” With this he departed in high spirits.

The next morning, as he swept the King’s chamber, he mumbled, What intelligence! Our King eats a cucumber in the loo.”

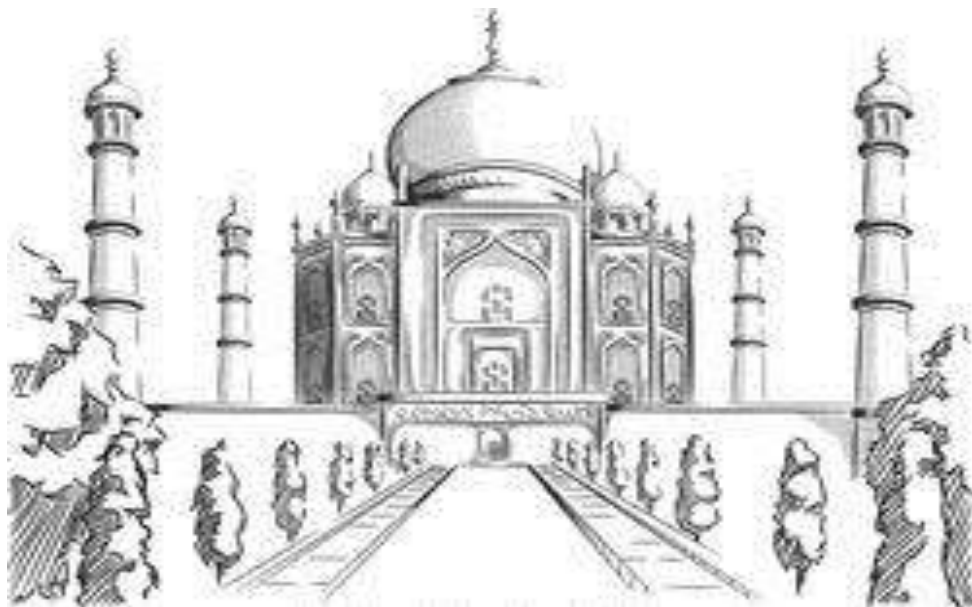
The King, lying in his bed, overheard this mumbling and was furious. "What nonsense are you talking? When have you ever seen me do anything of the sort!" he cried.

"O King! I was up all night as I was gambling and I am overtaken by sleep even when I sweep. I do not know what I said", replied Gorambha.

Then the King thought: "I have never ate a cucumber while engaged in that occupation. And since this fool has talked unimaginable nonsense about me, it must be the same about Dantila. If that is so, I have made a grave mistake in doubting the merchant's integrity and taking from him his honours. And in his absence all the King's business and city suffers."

He called Dantila back to his court and re-instated him to his position as the administrator with full honour.

**Moral: Treat everyone with respect. One who is too haughty to treat the lowly with respect will have to pay the price.**



## **Matrimonial Service**

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is dedicated to its matrimonial members to provide a service that will help members find a partner for marriage within our community. We feel it is time to make a few changes to help with this process and move forward with the times.

### **Changes we have made in 2018:**

#### **Website:-**

- A new data base on the website that will give members an option to add a **photo** if they wish and a space for members to write a **bio** about themselves and what they are looking for in a partner.
- Existing members would have received a letter with information about what we need from you to update your profile. Once you have received this letter please fill it out and send back to us soon as possible, so we can update our **NEW** data base and you can start using the new system.

#### **Matrimonial Service:-**

- Members will now be given the **option** to directly contact each other or have the **option** for parents to contact each other.
- All **new** members will be contacted by the office staff for phone conversation during the application process.
- We are also looking in to ways of making our Matrimonial events more successful.
- **Now on facebook -**  
<https://www.facebook.com/aryasamajwestmidlands/>

## **News**

**Free Yoga Lesson with Dr. Dheeraj Prakash Joshi Yogacharya -  
Every Thursday - 7pm – 8.15pm  
ALL ARE WELCOME!**

### **Condolence:**

- Mrs. Sudesh Bhandari and family – for loss of her beloved husband Mr. Vishwanath Bhandari ex-Vice President of Arya Samaj West Midlands year 2001-2003. He left the mortal body on 6th June 2019 at 4am. We Pray to Almighty God to grant his soul eternal peace and give strength to his family members & relatives to bear his loss.

### **Congratulations:**

- Mr. Jai Ganesh Bector and Mrs. Meena Bector - for being blessed with grandson named Veeren son of Manoj and Puja Bector. Wishing them all happiness and good health.
- Dr. Harsh Vardhan and Mrs. Pratibha Arya - for Simantonnayan Sanskar towards their daughter Puja. Wishing them all happiness and good health.
- Mr. Michael and Mrs. Bony Kresh – for House warming havan. Wishing them happiness and good health in their new home.
- Mrs. Krishna Sudera and family - for Shanti Havan on 1st death anniversary of her beloved husband Mr. Sohan Lal Sudera. Wishing Mr Sudera eternal peace

### **Sponsors (Yajman):**

- Dr. P.D. Gupta and Mrs. Rekha Gupta - for 91st birthday celebration of their respected mother Mrs. Savitri Devi on 26th May 2019. Wishing Mrs. Savitri Devi happiness and good health



- Mr. Rajive Bali and Mrs. Pooja Bali - for 3rd birthday celebrations of their grandson Viraj son of Vikas and Isha Bali on 9th June 2019. Wishing them all happiness and good health.

**Many congratulations to all the mentioned families who have had auspicious havan at their residences on different occasions or Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.**

### **Donations:**

- |                                    |      |
|------------------------------------|------|
| • Dr P.D. Gupta                    | £151 |
| • Mr Rajive Bali                   | £71  |
| • Mrs Nirmal Devi Prinja           | £21  |
| • Mr Gian Chand Farmah             | £51  |
| • Mrs. Sudesh Bhandari with langer | £650 |

### **Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services:**

- |                           |      |
|---------------------------|------|
| • Mr. Jai Ganesh Bector   | £101 |
| • Dr. Harish Vardhan Arya | £101 |
| • Mr. Michael Kresh       | £101 |
| • Mrs. Krishna Sudera     | £101 |
| • Mrs Sudesh Mohan        | £50  |
| • Mrs. Sudesh Bhandari    | £150 |

**Thank you for all your**  
**Donations!**



## **New Building Refurbishment Fund**

In month of June following people have donated...

<b><u>NAME</u></b>	<b><u>DONATION</u></b>
<b>NEW DONATIONS:-</b>	
Mrs Krishna Gupta	£1000
Mrs Rini Mukesh Jayawd	£101

**TOTAL SO FAR - £59,094.15**

**Thank you!**

### **Haven't Donated Yet ????**

**Those of you who would like to donate money to  
"Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands"  
New building fund please do so now!!!**

**Your help is highly appreciated.**

**By cheque - Payable to 'Arya Samaj West  
Midlands' and send back to us at 321 Rookery  
Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR  
or**

**Bank Transfer – The Co-operative Bank  
Name of account – Arya Samaj (Vedic Mission)  
West Midlands**

**Account number – 65839135 Sort Code – 08.92.99**



## **A TRIBUTE TO** **SHRI VISHWANATH BHANDARI**

On Thursday 6th June 2019 Shri Vishwanath Bhandari passed away.

Now we are left with his wonderful memories.

I met Bhandari ji in Arya Samaj West Midlands in year 1998.

Bhandari ji told Shri Krishan Chopra, President and me as Secretary that he would like to do something for our community. Obviously we were delighted by his offer.

Bhandari ji took charge of Day Centre of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands.

Day Centre at Arya Samaj was held on every Wednesday of the week from 11am till 2pm.

The previous Arya Samaj Bhavan was located at 188, Inkerman Street, Nechells, Birmingham.

In year 2000 when I became President of Arya Samaj West Midlands I phoned and requested Bhandari ji to join me in Executive Committee as a Vice President. Bhandari ji kindly accepted my offer. We eleven members of the Executive Committee and seven trustees worked together as a team. Together we took lot of decisions for the welfare and progress of our Arya Samaj.

Bhandari ji and Brij Bhushan Agarwal as Secretary worked very hard to run Day Centre of our Arya Samaj. They ran Day Centre in a very professional way. Attendance in the Day Centre was maximum in his time to about 40 to 50 persons in attendance.

One of his best attribute was that he always had a smile on his face irrespective of the situation.

His style of work was very methodical. He was very punctual in attendance at Executive Committee meetings and other events held in our Arya Samaj.

As a Vice President he helped me out enormously whether it was Matrimonial get together, re-establishing Arya Pratinidhi Sabha, UK, Gayatri Maha Yajna, Independence Day of India celebrations in our Arya Samaj. He helped me a lot in managing all kinds of crisis in running of our Arya Samaj. Bhandari ji took as one of his responsibility to look after the welfare of our new Resident priest and help him to settle in Arya Samaj building and in Birmingham city.

Later on Bhandari ji became Independent Auditor of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands accounts. He did it for quite a few years.

Shri Bhandari ji and Shri Brij Bhushan Agarwal were my elder brothers. We worked as a team and gave our selfless service to Arya Samaj West Midlands. Today I miss them very much.

I pray to Almighty God to rest his soul in peace and give strength to Mrs. Bhandari and family members to bear his loss.

In the end I request to the younger generation members of the family to help in running of our Arya Samaj.

Om Shaanti.

Dr. Narendra Kumar  
Chairman  
Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands  
321, Rookery Road  
Handsworth  
Birmingham  
B21 9PR

## **Fee for services provided by Arya Samaj West Midlands**

- Ordinary membership fee is £20 for 12 months.
- Renewal for ordinary members of ASWM will get reminder letter for their membership fee of £20 each year.
- Matrimonial Service - £90 for 12 months
- Hire of our hall –
  - Maharshi Dayanand Hall - £500 for 4 hours & £100 hourly.
  - Swami Shraddhanand Hall - £400 for 4 hours & £50 hourly.

## **Donations to Arya Samaj for Priest Service.**

- Marriage Ceremony performed by our priest - £400.
- Havan performed at home by our priest –
  - Birmingham and Surrounding Areas - £51
  - 12 Miles Outside of Birmingham - £101
- Cremation & Shanti Havan performed by our priest –
  - Birmingham and Surrounding Areas - £150
  - 12 Miles Outside of Birmingham - £200
  - Shanti Havan at Arya Samaj after cremation - £100